Dr. Shree Nath Singh
Deptt. Of History
Karim City College
Jamshedpur

1

18 वीं एवं 19 वीं शताब्दी में भारत की सामाजिक परिस्थितियाँ

18 वीं तथा 19 वीं शताब्दी का भारतीय पुनर्जागरण राजनीति तथा आर्थिक क्षेत्र में बाद में प्रारम्भ हुआ, परन्तु सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में पहले। 1 वास्तव में भारत की राजनीतिक तथा आर्थिक ह्रास की पृष्ठभूमि में यहां का सामाजिक तथा धार्मिक पतन कार्य कर रहा था। भारतीय सामाजिक जीवन की एक विशेषता यह रही है कि यहां प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक जितने भी सामाजिक तथा धार्मिक सुधार आन्दोलन हुए, वे मुख्यतः धार्मिक आन्दोलन के रूप में धर्म-प्रचारकों तथा सन्तों की प्रेरणा से हुए हैं। इसका कारण यह है कि भारत में धर्म तथा सामाजिक संरचना एक-दूसरे से घनिष्ट रूप से जुड़े हैं। यहां के सामाजिक जीवन तथा धर्म के मध्य विभाजन कर सकना कठिन है। प्राचीन काल में महावीर, गौतम बुद्ध, शंकराचार्य, मध्ययुग में कबीर, नानक, चैतन्य, दादू आदि सन्त और आधुनिक युग में राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द एवं सर सैयद अहमद खाँ आदि के द्वारा प्रवर्तित आन्दोलन सामाजिक आन्दोलन होते हुए भी धर्म से प्रेरित थे।

भारतीय समाज अनेक कुरीतियों तथा सामाजिक असंगत प्रथाओं से ग्रसित था। समाज में धार्मिक अंधविश्वासों एवं बाह्य आडम्बरों का बोलबाला था। अनेक धार्मिक कुप्रथाओं को भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं से जोड़ दिया गया था। महिलाओं की बड़ी दुर्दशा थी तथा उनके जीवन से जुड़ी अनेक कुप्रथायें उनके धार्मिक जीवन का अंग

IRJMSH

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

UGC ID - 48312

Impact Factor* : 7.8012

Ref IRJMSH/2021/A1014955

DOI : HTTPS : DOI.ORG 10.32804 IRJMSH

ISSN 2277 - 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

THIS CERTIFIES THAT

DR. SHREE NATH SINGH

HAS/HAVE WRITTEN AN ARTICLE / RESEARCH PAPER ON

18 वीं एवं 19 वीं शताब्दी में भारत की सामाजिक परिस्थितियाँ

APPROVED BY THE REVIEW COMMITTEE, AND IS THEREFORE PUBLISHED IN

Vol - 12 , Issue - 3 Mar , 2021

IRJMSH

Editor in Chief

www.IRJMSH.com

Google Scholar
Academia.edu
Cabell's Directories
Computer Science Directory
Crossref
Academic Search
EBSCO HOST
doi